Degree -1st. Paper-II

संस्कार (Samskar)

हमारे समाज में संस्कारों के लम्बे इतिहास और व्यापक प्रभाव का मूल कारण वह भारतीय दृष्टि है जो नैतिकता, आध्यात्मिकता तथा हृदय की शुद्धता के द्वारा व्यक्ति के समाजीकरण करने पर बल देता है। धर्म के विवेचन से स्पष्ट है कि व्यक्ति को पवित्र बनाने वाले विभिन्न अनुष्ठानों (rites) अथवा प्रतीकात्मक धार्मिक क्रियाकलापों को ही हम संस्कार कहते हैं।

संस्कार का अर्थ (Meaning of Samskar)

ग० राजबली पाण्डेय का कथन है कि "संस्कार का अभिप्राय केवल बाह्य धार्मिक क्रियाओं अनुष्ठानों, व्यर्थ के आडम्बरों, कोरे कर्मकाण्डों, राज्य द्वारा निर्दिष्ट चलनों, औपचारिकताओं तथा अनुशासित व्यवहार से नहीं। संस्कार शब्द का

अधिक उपयुक्त पर्याय अंग्रेजी का 'सेक्रामेण्ट' (Sacrament) शब्द है जिसका अर्थ है 'धार्मिक विधि-विधान' अथवा वह कृत्य जो आन्तरिक तथा आत्मिक सौन्दर्य का बाह्य तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है।"

हिन्दू जीवन के प्रमुख संस्कार (Major Samskar in Hindu Life Scheme)

इस विषय पर धर्मशास्त्रों में अत्यधिक भिन्नता देखने को मिलती है। परन्तु धर्मशास्त्रों के सभी संस्कारों में समान रूप से पाये जाते हैं निम्न प्रकार हैं—

(1) गर्भाधान

पूर्व मीमांसा में कहा गया है कि "जिस कर्म के द्वारा पुरुष-स्त्री में अपना बीज स्थापित करता है, उसे गर्भाधान कहते हैं।" हिन्दू समाज में यह विश्वास है कि पितृ-ऋण तभी चुकाया जा सकता है जब व्यक्ति स्वयं की सन्तान को जन्म दे।

(2) पुंसवन

पुंसवन का अभिप्राय उस कर्म से है जिसके द्वारा पुत्र के जन्म की कामना की जाय (पुमान् प्रसूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनमीरितम्)। इस प्रकार यह संस्कार गर्भ में शिशु की मंगल-कामना से सम्बन्धित है। गृह्यसूत्रों में तीसरे मास के पश्चात् इस संस्कार को करने का निर्देश दिया गया है।

(3) सीमन्तोन्नयन

शाब्दिक रूप से सीमन्तोन्नयन का अर्थ है गर्भिणी के केशों (सीमन्त) को ऊपर

उन्नयन (उन्नयन)। यह संस्कार इस विश्वास पर आधारित है कि कोई भी अमंगलकारी शक्ति गर्भिणी को ग्रसित न कर सके। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार शिशु के जन्म से पहले तक यह किसी भी समय किया जा सकता है।

(4) जातकर्म

यह संस्कार बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद किया जाता है। इसका उद्देश्य नवजात शिशु को अमंगलकारी शक्तियों से बचाना तथा आशीर्वाद के द्वारा उसके दीर्घायु तथा स्वस्थ रहने की कामना करना है।

(5.) नामकरण

इस संस्कार से बच्चे के नाम को निर्धारित करना माना जाता है।

(6.) निष्क्रमण

निष्क्रमण का तात्पर्य एक निश्चित अवधि के पश्चात माता तथा शिशु का प्रसूति-गृह से बाहर निकलकर स्वच्छन्दतापूर्वक घर के अन्य भागों में जाने की अनुमति प्राप्त करना है।

(7) अन्न-प्राशन

इस संस्कार का तात्पर्य शिशु को प्रथम बार अन्न देने के विधान से सम्बन्धित है। गृह्यसूत्रों, मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में इस संस्कार का समय जन्म के पश्चात छठे मास में निर्धारित किया गया है।

(8.) कर्ण-वेध

डा॰ पाण्डेय का कथन है कि कानों को छेदने का प्रश्न है, निःसंदेह आरम्भ में इसका

प्रचलन अलंकरण के लिए हुआ होगा।

(9) चूड़ाकरण

इस संस्कार को प्रचलित भाषा में 'मुण्डन' के नाम से जाना जाता है। इस संस्कार द्वारा गर्भकाल में उत्पन्न केशों तथा नखों को शरीर से पृथक कर देना है।

(10) विद्यारम्भ

यह संस्कार बालक की शिक्षा से सम्बद्ध है। विश्वामित्र के अनुसार विद्यारम्भ संस्कार बालक की आयु के पाँचवें वर्ष में किया जाना चाहिए।

(11) उपनयन

उपनयन संस्कार का अर्थ अथर्ववेद में 'ब्रह्मचारी द्वारा शिक्षा ग्रहण करने' तथा 'ब्रह्मचारी को वेदों की दीक्षा देने' से है। आधुनिक काल में उपनयन संस्कार द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य) के लिए किया जा सकता है, जिसे 'जनेऊ' की संज्ञा दी जाती है।

(12) वेदारम्भ

यह वह संस्कार है जिसके द्वारा वेदों का अध्ययन आरम्भ हो जाता था। सामान्य रूप से उपनयन संस्कार के समय से ही वेदों के अध्ययन का आरम्भ मान लिया जाता है।

(13) केशान्त अथवा गोदान

केशान्त का तात्पर्य बच्चे द्वारा 16 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर पहली बार उसकी दाढ़ी और मूँछ के बालों को साफ करना है।

(14) समावर्तन

यह ब्रह्मचर्य आश्रम का अन्तिम संस्कार है। समावर्तन का अर्थ है 'वेदाध्ययन

के पश्चात घर की ओर प्रस्थान करना।

(15) विवाह

यह संस्कार व्यक्ति के जैविकीय आवश्यकता की सन्तुष्टि करता है। वहीं दूसरी ओर एक उन्नतिशील जीवन की ओर उन्मुख करता है।

(16) अन्त्येष्टि

अन्त्येष्टि हिन्दू-जीवन का अन्तिम संस्कार है जिसके साथ व्यक्ति के लौकिक जीवन की पूर्ण समाप्ति हो जाती है। उसके पश्चात श्राद्ध और पिण्डदान भी इस संस्कार की अगली कड़ियाँ हैं जिसका उद्देश्य प्रेतात्मा को आत्मा की शान्ति करना है। इस प्रकार अवधि और कर्मकाण्ड के दृष्टिकोण से अन्त्येष्टि संस्कार की प्रक्रिया सबसे अधिक लम्बी है।